प्रातः क्लास 7/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। बाप ने अर्थ तो बच्चों को समझाया है। मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ। जब ओम शान्ति कहा जाता है तो आत्मा को अपना घर याद आता है। मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ। फिर जब ऑरगन्स मिलते हैं तब टॉकी बनते हैं। पहले छोटी ऑरगंस होती है, फिर बड़ी होती है। अब परमपिता–परमात्मा है निराकार। उनको भी रथ चाहिए टॉकी बनने लिए। जैसे तुम आत्माएँ रहने वाली परमधाम के हो। यहाँ आकर टॉकी बनते हो। बाप भी कहते हैं तुमको नॉलेज देने लिए मैं भी टॉकी बना हूँ। बाप अपना और रचना के आदि-मध्य-अंत का परिचय देते हैं। यह है रूहानी पढ़ाई। वह होती है जिस्मानी पढ़ाई। वह अपन को शरीर समझते हैं। ऐसे कोई नहीं कहेंगे हम आत्मा इन द्वारा सुनते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो। बाप है पतित-पावन। वही आकर समझाते हैं, मैं कैसे आता हूँ। तुम्हारे मिसल मैं गर्भ में नहीं आता हूँ। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। फिर कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यह रथ है। इनको माता भी कहा जाता है। सबसे बड़ी नदी ब्रह्मपुत्री है, तो यह है सभी से बड़ी नदी। पानी की तो बात ही नहीं। यह है महानदी अर्थात् सबसे बड़ी। ज्ञान नदी है। तो बाप आत्माओं को समझाते हैं मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुम जैसे बात करते हो, मैं भी बात करता हूँ। मेरा पार्ट तो सभी से पिछाड़ी का है। जब तुम बिल्कुल पतित बन जाते हो तब मेरा आना होता है। तुमको वारिस बनाने लिए आना होता है। इन ल॰ना॰ को ऐसा बनाने वाला कौन? सिवाय ईश्वर के और कोई के लिए नहीं कह सकेंगे। बेहद का बाप ही स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। भगवान ही स्वर्ग, नई दुनिया स्थापन करते हैं ना। उसको सतोप्रधान दुनिया कहा जाता है। इनको पुरानी तमोप्रधान दुनिया कहा जाता है। तो ज़रूर सतोप्रधान कोई तो बनाते होंगे ना। बाप ही ज्ञान का सागर है। वही कहते हैं मैं इस मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ। मैं आदि-मध्य-अन्त को जानता हूँ। मैं सत् हूँ, चैतन्य हूँ। मैं चैतन्य बीजरूप हूँ। इस सृष्टि रूपी सारे झाड़ की मेरे में नॉलेज है। इनको सृष्टिचक्र अथवा ड्रामा कहा जाता है। यह फिरता ही रहता है। वह हद का ड्रामा दो घंटा चलता है। इनकी रील 5000 वर्ष की है। जो-जो टाइम पास होता जाता है, 5000 वर्ष से कम होता जाता है। तुम जानते हो पहले हम देवी-देवता थे। फिर आस्ते-आस्ते हम क्षत्रिय कुल में आ गए। यह सारा राज़ बुद्धि में है ना। तो यह सभी सुमिरण करते रहना चाहिए। हम शुरू-2 में पार्ट बजाने आए, तो हम सो देवता थे। 1250 वर्ष राज्य किया। टाइम तो गुजरता जाता है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। लाखों वर्ष का तो कोई चिंतन कर भी न सके। तुम समझते हो हम यह देवी-देवता थे। फिर पार्ट बजाते आए। वर्ष पिछाड़ी वर्ष पास करते-2 अभी 4900 वर्ष पास कर चुके हैं। पार्ट बजाते आए। सुख कम होता गया। हरेक चीज़ सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो होती है। पुरानी ज़रूर होती है। यह फिर है बेहद की बात। यह सभी बातें अच्छी रीत बुद्धि में धारण कर औरों को समझाना है। सभी तो एक जैसे नहीं होते। ज़रूर भिन्न-2 रीति समझाते होंगे। चक्र पर समझाना सबसे सहज है। ड्रामा और झाड़ दोनों मुख्य चित्र हैं। कल्प–वृक्ष नाम है ना। कल्प की आयु कितने वर्ष की है, यह कोई भी नहीं जानते। मनुष्यों की तो अनेक मतें हैं। कोई क्या कहेंगे, कोई क्या कहेंगे। अभी तुमने अनेक मनुष्यमत को भी समझा है और एक ईश्वरीय मत को भी समझा है। कितना फर्क है! ईश्वरीय मत से तुमको फिर से नई दुनिया में जाना पड़े। और कोई की मत से तुम वापिस जा नहीं सकते हो। दैवीमत वा मनुष्यमत से वापिस नहीं जाते। दैवीमत से भी तुम उतरते ही हो; क्योंकि कला कम होती जाती है। आसुरी मत से भी उतरे हो; परन्तु दैवीमत में सुख है, आसुरी मत में दुख है। दैवीमत भी इस समय बाप की दी हुई है इसलिए तुम सुखी रहते हो। बेहद का बाप कितना दूर से आते हैं। मनुष्य कमाने लिए बाहर जाते हैं। जब बहुत धन इकट्ठा होता है तो फिर आते हैं। बाप भी कहते हैं मैं तुम बच्चों के लिए बहुत खज़ाना ले आता हूँ; क्योंकि जानता हूँ तुमको बहुत माल दिए थे। वह सभी तुमने गँवा दिया। तुमसे ही बात करता हूँ, जिन्होंने प्रैक्टिकल में गँवाया है। 5000 वर्ष की बात तुमको याद है ना। कहते हैं– हाँ, बाबा! 5000 वर्ष पहले आपसे मिले थे। आपने वर्सा दिया था। अभी तुमको स्मृति आई है। बरोबर

बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लिया था। बाबा अ(ा)प से नई दुनिया की राजाई का वर्सा लिया था। अच्छा, फिर पुरुषार्थ करो। ऐसे नहीं कहो, बाबा! माया के भूत ने हमको हरा दिया। देहअभिमान के बाद ही तुम माया से हराते हो। लोभ किया, रिश्वत खाई। लाचारी की बात और है। बाबा जानते हैं लोभ के सिवाय पेट की पूजा नहीं होगी। हर्जा नहीं। भल खाओ; परन्तु कहाँ फँस न मरना, फिर तुमको ही दुख होगा। पैसा मिलेगा खुश हो जावेंगे। कहाँ पुलिस ने पकड़ लिया तो जेल में जाना पड़ेगा। ऐसा काम न करो। इसका फिर रिस्पॉन्सिबुल मैं नहीं हूँ। पाप करते हैं तो जेल में जाते हैं। वहाँ तो जेल आदि होता नहीं। तो ड्रामा के प्लैन अनुसार जो कल्प पहले तुमको वर्सा मिला है 21 जन्म लिए वैसे ही फिर लेंगे। सारी राजधानी बनती है। गरीब प्रजा, साहुकार प्रजा; परन्तु वहाँ दुख होता नहीं। यह बाप गैरन्टी करते हैं। सभी एक समान तो बन न सके। सूर्यवंशी-चंद्रवंशी राजाई में सभी चाहिए ना। बच्चे जानते हैं कैसे बाप हमको विश्व की बादशाही देते हैं, फिर उतरते हैं। स्मृति में आया ना। यहाँ भी बाप स्मृति दिलाते हैं। यह रूहानी पढ़ाई दुनिया भर में और कोई पढ़ा न सके। गीता में भी लगा(लिखा) हुआ है मन्मनाभव। इनको महामंत्र, वशीकरण मंत्र कहते हैं अर्थात माया पर जीत पाने का मंत्र। माया जीत जगत जीत। माया 5 विकार हो जाता है। रावण का चित्र बिल्कुल क्लीयर है। 5 विकार स्त्री में, 5 विकार पुरुष में। इनमें गधे अर्थात टट्टू बन जाते हैं। इसलिए ऊपर में गधे का शीश देते हैं। अभी तुम समझते हो ज्ञान बिगर हम भी गधे थे। फिर अभी गॉड बनते हैं। बाप कितना रमणीक बातें बैठ पढ़ाते हैं। वह फिर औरों को सुनाते हैं। पहले तो पढ़ाने वाले का निश्चय कराना चाहिए। बोलो, बाप ने हमको यह समझाया है। अभी मानो न मानो। यह बेहद का बाप तो है ना। श्रीमत से श्रेष्ठ बनाते हैं, तो श्रेष्ठ नई दुनिया भी ज़रूर चाहिए ना। अभी तुम समझते हो हम स्लम(स्लम्ब)(किचड़े की दुनिया) में बैठे हैं। दूसरा कोई समझ न सके। वहाँ हम बहिश्त, स्वर्ग में सदा सुखी रहते हैं। यहाँ नर्क में कितना दुख है। इनको स्लम व विषय वैतरणी नदी कहा जाता है। पुरानी छी-छी दुनिया है। अभी तुम फ़ील करते हो कहाँ सतयुग स्वर्ग, कहाँ कलियुगी नर्क। नर्क को स्लम कहेंगे। वेश्यालय है। स्वर्ग को कहा जाता है वण्डर ऑफ (दी) वर्ल्ड। त्रेता को भी नहीं कहेंगे। यहाँ इस गंदी दुनिया में रहने में मनुष्यों को कितनी खुशी होती है। विष्टा के कीड़ों को भ्रमरी भूं-2 कर आप समान बनाती है। तुम किचड़े में पड़े हुए थे। मैं आकर तुमको भूं-2 कर तुमको कीड़े से अर्थात शूद्र से ब्राह्मण बनाया है। अभी तुम डबल सिरताज बनते हो। तो कितनी खुशी रहनी चाहिए। पुरुषार्थ भी पूरा करना चाहिए। बेहद का बाप समझानी तो बहुत सहज देते हैं। दिल से लगता भी है बाबा सच-2 कहते हैं। उनको अपने घर में ले आते हो। कई तुमको कहते हैं यहाँ आकर हमको समझाओ। तुम समझते हो हम हैं विषय सागर में गोता खाने वाले। माया के दुब्बण में फँस मरे हैं। शो कितना है। बाप समझाते हैं हम आकर तुमको दब्बण से बचाते हैं। स्वर्ग में ले जाते हैं। स्वर्ग का नाम सुना हुआ है। अभी स्वर्ग तो है नहीं। सिर्फ यह चित्र है। यह स्वर्ग के मालिक कितने धनवान थे। भक्तिमार्ग में भल रोज़ मंदिरों में जाते थे; परन्तु यह ज्ञान कुछ नहीं था। अभी तुम समझते हो भारत में यह ..... आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। इन्हों का राज्य कब था यह किसको भी पता नहीं है। देवी-देवताओं के बदली हिन्दू कहते रहते हैं। शुरू में हिन्दू महासभा का प्रेसिडेंट सावरकर आया था। बोला– हम विकारी असुर हैं, अपन को देवी-देवता कैसे कहलावें? हमने कहा– अच्छा, आओ, तो तुमको समझावें। देवी-देवता धर्म की स्थापना फिर से हो रही है। हम तुमको स्वर्ग के मालिक बना देंगे। बैठकर सीखो। बोला– दादा, फुर्सत कहाँ। फुर्सत नहीं तो फिर देवता कैसे बनेंगे? यह पढ़ाई है ना। बिचारे के तकदीर में नहीं है। मर गया। ऐसे भी नहीं कहेंगे, वह कोई प्रजा में आवेंगे। नहीं। ऐसे ही चला आया था। सुना था यहाँ पवित्रता का ज्ञान मिलता है; परन्तु आ न सके। फिर भी हिन्दू धर्म में ही आवेंगे। सतयुग के आदि सनातन देवी-देवता धर्म में नहीं आवेंगे। ऐसे बहुत हैं। भल अभी हिन्दू धर्म में हैं; परन्तु आवेंगे यहाँ से सुनकर, फिर हिन्दू धर्म में गए हैं।

माया बड़ी प्रबल है। अभी तुम बच्चे समझ गए हो हम आत्माओं का बाप है। उनको भी दिल की बात न बतावेंगे तो फिर उल्टा-सुल्टा पाप होता रहेगा। रावण की दुनिया में तो पाप होते ही रहते हैं। कहते हैं हम जन्म-जन्मांतर के पापी हैं। यह किसने कहा? आत्मा कहती है, बाप के आगे या देवताओं के आगे। अभी तुम फ़ील करते हो बरोबर हम जन्म-जन्मांतर के पापी थे। रावण राज्य में पाप ज़रूर किए हैं। अनेक जन्मों के पाप तो वर्णन नहीं कर सकते हैं। इस जन्म का वर्णन कर सकते हैं। वह सुनाने से भी हल्का हो जावेगा। सर्जन के आगे बीमारी सुनानी है। फलाने को मारा, चोरी की, इसको सुनाने में लज्जा नहीं आती है। विकार की बात सुनाने में लज्जा आती है! सर्जन से लज्जा करेंगे तो बीमारी छूटेगी कैसे? फिर अन्दर दिल को खाती रहेगी। बाप को याद कर न सकेंगे। सच सुनावेंगे तो याद कर सकेंगे बहुत। बाप कहते हैं मैं सर्जन तुम्हारी कितनी दवाई करता हूँ। तुम्हारी काया सदैव कंचन रहेगी। सर्जन को बताने से हल्का हो जाता है। कोई-2 आपे ही लिख देते हैं। बाबा हमने जन्म-जन्मांतर पाप किए हैं। पापात्माओं की दुनिया में पापात्माएँ बने हैं। पापात्मा पापात्मा साथ ही लेन-देन करती है। विकारी विकारियों को दान करेंगे, तो विकारी ही बनेंगे ना। सन्यासी लोगों को कितने पैसे देते हैं। बहुत विकारियों का खाया है तो वह भी बहुत विकारी बन पड़े हैं। इसलिए उन्हों का नाम ही रखा है हिरण्यकश्यिप। इन्होंने तुमको गिराया है। अनेक गुरु लोग हैं जो तुमको भक्तिमार्ग की बातें ही सुनाते रहते हैं। गुरु लोग तुमको गिराते-2 नीचे ही ले आए हैं। अब बाप कहते हैं इन कलियुगी गुरुओं को छोड़ो। गोली मारो। मैं तुम्हारा सद्गुरु हूँ। सद्गुरु अकालमूर्त कहते हैं ना। अकाल अर्थात जिसको काल खा न सके। वह तो आत्मा है। सच्चा सद्गुरु अकाल मूर्त है बाप। वह कब पुनर्जन्म में आते नहीं। उन्होंने अकाल तख्त नाम रखा है; परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। बाप ने समझाया है आत्मा का यह तख्त है। शोभा भी यहाँ है। तिलक भी यहाँ देते हैं ना। असल में तिलक एकदम बिन्दी मिसल देते हैं। अभी (तुमको अपन को आपे ही तिलक देना है।) (बाप को) याद करते रहो। जो बहुत सर्विस करेंगे तो बड़ा महाराजा बनेंगे नई दुनिया में। पुरानी दुनिया के लिए थोड़े ही पढ़ना है। तो इतनी ऊँच पढ़ाई पर अटेन्शन देना चाहिए। यहाँ बैठते हो तो भी कोई का बुद्धियोग अच्छा रहता है, कोई-2 का कहाँ-2 चला जाता है। कोई 10 मिनट लिखते हैं, कोई 5 मिनट लिखते हैं। जिसका चार्ट अच्छा होगा, उनको नशा चढ़ेगा– बाबा, इतना समय हम आपकी याद में रहे। 15 मिनट से जास्ती तो कोई लिख नहीं सकते। बुद्धि इधर-उधर भागती है। अगर सभी एकरस हो जाएँ तो फिर कर्मातीत अवस्था हो जाए। (बाप) कितनी मीठी, लवली बातें सुनाते हैं। ऐसे तो कोई सुना न सके। बाप ही आकर इस रथ में प्रवेश करते हैं। यह कहते हैं मैं कोई पंडित आदि नहीं था। न कोई गुरु ने सिखाया। गुरु से सिर्फ एक थोड़े ही सिखेगा। गुरु से तो हज़ारों सीखे होंगे। सद्गुरु से तुम कितने सीखते हो। यह माया को वश करने का मंत्र है। माया 5 विकारों को कहा जाता है। धन को सम्पत्ति कहा जाता है। ल॰ना॰ के लिए कहेंगे इन्हों के पास बहुत सम्पत्ति है। ल॰ना॰ को कब माता-पिता नहीं कहेंगे। आदिदेव-आदिदेवी को जगतपिता-जगतअम्बा कहते हैं। इनको नहीं। यह तो स्वर्ग के मालिक हैं। अविनाशी ज्ञान धन लेकर यह इतने धनवान बने हैं। अम्बा के पास अनेक आशाएँ लेकर जाते हैं। ल॰ के पास सिर्फ धन के लिए जाते हैं, और कुछ नहीं। तो बड़ी कौन हुई? यह किसको भी पता अम्बा से क्या मिलता है। लक्ष्मी से क्या मिलता है। लक्ष्मी से सिर्फ धन मांगते हैं। अम्बा से तुमको सभी कुछ मिलता है। अम्बा का नाम जास्ती है; क्योंकि माताओं को दुख भी जास्ती सहन करना पड़ा है, तो माताओं का नाम जास्ती होता है। अच्छा, फिर भी बाप कहते हैं बाप को याद करो तो पावन बन जावेंगे और चक्र को याद करो, दैवीगुण धारण करो, बहुतों को आप समान बनाओ। गॉड फादर के तुम स्टूडेंट हो। कल्प पहले भी बने थे। फिर अब भी वही एम-ऑबजेक्ट है। यह है सत्य नर से ना॰ बनने की कथा। अच्छा, मीठे-2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।